२. दो लघुकथाएँ

– *हरि जोशी*

नींव

बहुमंजिला इमारत की दीवार नींव से उठ रही थी । ठेकेदार नया था । भयभीत-सा वह एक तगारी सीमेंट और पाँच तगारी रेत के मसाले से ईंटों की जुड़ाई करवा रहा था । अगले दिन अधिकारी महोदय आए । उन्होंने काम के प्रति घोर असंतोष व्यक्त किया । महोदय बोले-''ऐसा काम करना हो तो कहीं और जाइए ।''

अगले दिन सशंकित नये ठेकेदार ने एक तगारी सीमेंट और तीन तगारी रेत के मसाले से ईंटों की जुड़ाई की । संबंधित अधिकारी आए । उन्होंने नींव की दीवार पर एक निगाह डाली और गरम हो गए । इस बार ठेकेदार को अंतिम चेतावनी दी, 'यदि कल तक काम में पर्याप्त सुधार नहीं किया गया तो काम बंद करवा दिया जाएगा ।'

जब नये ठेकेदार की समझ में बात नहीं आई तो उसने एक अनुभवी ठेकेदार से इस समस्या पर उसकी सलाह चाही । अनुभवी ठेकेदार ने बताया कि ये महोदय रिश्वत चाहते हैं । इसीलिए काम में कमी बता रहे हैं । नया ठेकेदार ईमानदार था । वह रिश्वत देने-लेने को अपराध समझता था । उसने भ्रष्ट अधिकारी को पाठ पढ़ाने का निश्चय कर लिया ।

अगले दिन अधिकारी महोदय निरीक्षण करने आए । ठेकेदार ने उन्हें रुपयों से भरा लिफाफा पकड़ा दिया । अधिकारी प्रसन्न होकर जैसे ही जाने लगे वैसे ही एकाएक वहाँ उच्च अधिकारी आ गए । अधिकारी महोदय रिश्वत लेते हुए रँगे हाथों पकड़े गए ।

वस्तुतः रात में ही ईमानदार ठेकेदार ने अधिकारी महोदय के खिलाफ उच्च अधिकारी के पास शिकायत कर दी थी । उच्च अधिकारी ईमानदार थे । उन्होंने कहा-''कुछ एक भ्रष्ट अधिकारियों के कारण ही पूरा प्रशासन बदनाम होता है ।'' उन्होंने भ्रष्ट अधिकारी को दंड दिलवाने का निर्णय ले लिया । सच ही कहा है- 'बुरे काम का बुरा नतीजा ।' ठेकेदार और उच्च अधिकारी की ईमानदारी का समाचार चारों तरफ फैल गया । उनका सार्वजनिक समारोह में सम्मान किया गया ।

— ० —

परिचय

जन्म : १९४३, खूड़िया (म.प्र.)

परिचय : सेवानिवृत्त प्राध्यापक हरि जोशी जी की साहित्यिक रचनाएँ हिंदी की लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं । आपको 'गोयनका सारस्वत सम्मान', 'वागीश्वरी सम्मान' प्राप्त हुए हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'पंखुरिया', 'यंत्रयुग', 'अखाड़ों का देश', 'भारत का राग-अमेरिका के रंग' आदि ।

गद्‍य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं । प्रथम लघुकथा में जोशी जी ने बताया है कि हमें बुरे काम का फल बुरा ही मिलेगा अतः बुरे काम नहीं करने चाहिए ।

दूसरी लघुकथा में आपने समझाया है कि कठोरता की अपेक्षा विनम्रता अधिक महत्त्वपूर्ण है । 'घमंडी' का सिर हमेशा नीचा होता है। अतः हमें घमंड नहीं करना चाहिए।

मौलिक सृजन

'विनम्रता सारे सद्‍गुणों की नींव है' विषय पर अपने मन के भाव लिखो ।

संभाषणीय

'इंद्रधनुष के सात रंग, रहें हमेशा संग-संग' इस कथन के आधार पर कहानी बनाकर अपने सहपाठियों के सामने प्रस्तुत करो ।

श्रवणीय

किसी समारोह का वर्णन उचित विराम, बलाघात, तान-अनुतान के साथ 'एकाग्रता' से सुनो और यथावत सुनाओ ।

पठनीय

श्रमनिष्ठा का महत्त्व बताने वाला कोई निबंध पढ़ो ।

लेखनीय

किसी समारोह के मुख्य बिंदुओं, एवं मुद्दों को पढ़ो । इनका पुनः स्मरण करके लिखो ।

जीभ का वर्चस्व

पंक्तिबद्ध और एकजुट रहने के कारण दाँत बहुत दुस्साहसी हो गए थे । एक दिन वे गर्व में चूर होकर जिह्वा से बोले, ''हम बत्तीस घनिष्ठ मित्र हैं, एक-से-एक मजबूत । तू ठहरी अकेली, चाहें तो तुझे बाहर ही न निकलने दें ।'' जिह्वा ने पहली बार ऐसा कलुषित विचार सुना था । वह हँसकर बोली, ''ऊपर से एकदम सफेद और स्वच्छ हो पर मन से बड़े कपटी हो ।''

''ऊपर से स्वच्छ और अंदर से काले घोषित करने वाली जीभ ! वाचालता छोड़, अपनी औकात में रह । हम तुझे चबा सकते हैं । यह मत भूल कि तू हमारी कृपा पर ही राज कर रही है'', दाँतों ने किटकिटाकर कहा । जीभ ने नम्रता बनाए रखी किंतु उत्तर दिया, ''दूसरों को चबा जाने की ललक रखने वाले बहुत जल्दी टूटते भी हैं । सामनेवाले तो और जल्दी गिर जाते हैं । तुम लोग अवसरवादी हो, मनुष्य का साथ तभी तक देते हो, जब तक वह जवान रहता है । वृद्धावस्था में उसे असहाय छोड़कर चल देते हो ।''

शक्तिशाली दाँत भी आखिर अपनी हार क्यों मानने लगे ? बोले, ''हमारी जड़ें बहुत गहरी हैं । हमारे कड़े और नुकीलेपन के कारण बड़े-बड़े हमसे थर्राते हैं ।''

जिह्वा ने विवेकपूर्ण उत्तर दिया, ''तुम्हारे नुकीले या कड़ेपन का कार्यक्षेत्र मुँह के भीतर तक सीमित है । विनम्रता से कहती हूँ कि मुझमें पूरी दुनिया को प्रभावित करने और झुकाने की क्षमता है ।''

दाँतों ने पुनः धमकी दी, ''हम सब मिलकर तुझे घेरे खड़े हैं । कब तक हमसे बचेगी ?'' जीभ ने दाँतों के घमंड को चूर करते हुए चेतावनी दी, ''डॉक्टर को बुलाऊँ ? दंत चिकित्सक एक-एक को बाहर कर देगा । मुझे तो छुएगा भी नहीं और तुम सब बाहर दिखाई दोगे ।''

घमंडी दाँत अब निरुत्तर थे । उन्हें कविता की यह पंक्ति याद आ गई, 'किसी को पसंद नहीं सख्ती बयान में, तभी तो दी नहीं हड्डी जबान में ।' घमंडी दाँतों ने आखिर जीभ का लोहा मान लिया ।

—— ० ——

शब्द वाटिका

तगारी = बड़ा तसला, घमेला
कलुषित = अपवित्र, दूषित
ललक = लालसा, तीव्र इच्छा
अवसरवादी = स्वार्थी, मतलबी
बयान = चर्चा, आवाज, कथन

मुहावरा

लोहा मानना = श्रेष्ठता को स्वीकर करना
रँगे हाथ पकड़ना = अपराध करते हुए प्रत्यक्ष पकड़ना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

दाँतों की विशेषताएँ

(२) उत्तर लिखो :

१. जीभ दुवारा दी गई चेतावनी ↓ ______

२. पंक्तिबद्ध और एकजुट रहने के कारण दाँतों में आया गलत परिवर्तन ↓ ______

(३) विधानों के सामने चौखट में सही ☑ अथवा गलत ☒ चिह्न लगाओ :

१. जिह्वा ने अविवेक पूर्ण उत्तर दिया । ☐
२. दाँत घमंडी थे । ☐
३. सभी अपराधियों को नियमानुसार सजा नहीं हुई । ☐
४. ठेकेदार पुराना था । ☐

(४) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
१. बहुमंजिला	______	१. ईमानदार
२. अधिकारी	______	२. इमारत
३. नया ठेकेदार	______	३. भ्रष्ट
४. सार्वजनिक समारोह	______	४. अनुभवी
		५. सम्मान

भाषा बिंदु निम्नलिखित शब्दों के आधार पर मुहावरे लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

ईंट — जान — पानी — खिचड़ी

उपयोजित लेखन 'जल के अपव्यय की रोकथाम' संबंधी चित्रकला प्रदर्शनी का आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन किसी ग्रामीण और शहरी व्यक्ति की दिनचर्या की तुलनात्मक जानकारी प्राप्त करके आपस में चर्चा करो ।

IZ8GSD